शहर से निकाले
पुनर्वास क्षेत्र में बसे लोगों की सुरक्षा

सुरभि टंडन मेहरोत्रा

जागोरी ने सार्वजनिक जगहों की सुरक्षा व उपयोग से जुड़े अपने काम के दौरान दिल्ली में कई सेफ़्टी ऑडिट यानी सुरक्षा जांच की हैं। इस जांच में औरतें किसी इलाके में घूमकर वहां मौजूद सुरक्षा व असुरक्षा के मानकों की समीक्षा करती हैं। दिल्ली में मध्यमवर्गीय रिहाइशी क्षेत्र, विश्वविद्यालय परिसर, व्यवसायिक इलाके व पुनर्वास क्षेत्र इस जांच में शामिल किये गये हैं। जांच से पता चला कि औरतों के मन में वास्तविक हिंसा के साथ-साथ हिंसा का डर भी होता है जिसके चलते वे सार्वजनिक स्थलों पर हक़ और वैधता से नहीं जातीं। इस डर का अनुभव रहने की जगह, कार्यस्थल तथा आवाजाही को प्रभावित करता है और हर वर्ग की महिला के लिए ये एहसास अलग-अलग होते हैं।

इस लेख में विस्थापन के बाद नये इलाकों में पुनर्वासित परिवारों की महिलाओं व लड़कियों द्वारा सार्वजनिक जगहों के इस्तेमाल की समीक्षा की गई है। लेख में इन महिलाओं द्वारा अपनी नई ज़िंदगी बसाने, जिसमें नए घर, सामाजिक संबंध, रोज़गार व शिक्षा के मुद्दे तथा रोज़मर्रा झेली जाने वाली हिंसा भी शामिल है, तथा सार्वजनिक स्थलों से उनके संबंधों की समझ बनाने की कोशिश की गई है। जैसे-जैसे समुदाय इन नए इलाकों में अपनी पकड़ बनाता जाता है वैसे-वैसे असुरक्षा से जुड़े कुछ मुद्दे परिवर्तित होते हैं या बदलने लगते हैं तथा कुछ पुराने व नये आयामों का लड़कियों व महिलाओं को अब भी सामना करना पड़ता है।

जागोरी मदनपुर खादर, जेजे कालोनी के फेज़-3 में 2003 के अंत से काम कर रही है। सन् 2000 से लेकर 2009 तक यहां पुनर्वास का काम जारी था। नेहरू प्लेस, गोविंदपुरी, कैलाश कालोनी, राजनगर, अलकनंदा, ईस्ट ऑफ़ कैलाश से अनेक समुदाय यहां आये हैं। यहां काफी औरतें घरेलू कामगार, कबाड़ी, चाय, खाने की दुकान, सिगरेट-बीड़ी के खोखे या पीस रेट पर काम करती हैं। युवा लड़कियां स्कूल जाती हैं। शिक्षा व रोज़गार के अलावा यहां औरतों को बाज़ार व स्वास्थ्य सुविधाएं मुहय्या हैं। आवाजाही के लिए पैदल चलना, बस, ऑटो रिक्शा उपलब्ध हैं।

मदनपुर खादर दिल्ली व उत्तर प्रदेश सीमा पर स्थित पुनर्वास क्षेत्र है जो पूर्वी दिल्ली के कालिंदी कुंज के नज़दीक है। जेजे कालोनी, खादर गांव के साथ में है तथा यमुना नहर इसके पास से गुज़रती है। यहां पहुंचने के लिए नोएडा से आने वाली सड़क के एक किनारे पर नहर है व दूसरी तरफ इण्डियन ऑयल डिपो है जिसके कारण सड़क पर भारी यातायात रहता है। मदनपुर खादर जेजे कालोनी तक खादर गांव से भी पहुंचा जा सकता है।

इस इलाके में पक्के व कच्चे दोनों घर हैं। घरों के बाहर संकरी ईंटों की सड़क पर अधिकांश परिवार घर का सामान जैसे खाट, बालटी, चूल्हा रखते हैं। हर ब्लॉक में शौचालय हैं जिन्हें पैसे देकर इस्तेमाल किया जा सकता है। ये शौचालय रात दस बजे बंद हो जाते हैं। उसके बाद सभी रहने वालों को खुले खेतों का उपयोग करना पड़ता है। फेज़-3 से आने वाली मुख्य सड़क व अंदर संकरे रास्ते पर काफी दुकानें

मदनपुर खादर में शौचालय के साथ लगा खाली मैदान

हैं। यहां पर कोई बस स्टॉप नहीं बनाए गए हैं हालांकि बसें इस इलाके में तीन जगह रुकती हैं तथा प्राईवेट आरटीवी गाड़ियां सड़क के किनारे कई स्थानों पर रुक जाती हैं। ये स्टॉप यहां के अनौपचारिक बस/गाड़ी स्टॉप कहलाते हैं। यहां पर अभी तक कोई सार्वजनिक पार्क नहीं बनाया गया है जबकि बगीचे की आबंटित भूमि निर्धारित कर दी गई है। पास का एक इलाका जिसे 'पहाड़ी' कहा जाता है का इस्तेमाल औरतें शौच व ईंधन के लिए लकड़ी इकट्ठा करने के लिए करती हैं। इस पुनर्वास क्षेत्र के चारों ओर कोई सीमा नहीं है जिसके कारण किसी भी तरफ से आना-जाना संभव है। शुरूआत में फेज़-3 के आस-पास खेत थे जो अब धीरे-धीरे कम होते जा रहे हैं। दूसरे फेज़ कुछ ही दूर पर स्थित हैं और सबसे अंतिम फेज़ एक किलोमीटर की दूरी पर है।

एक औरत जिसकी उम्र चालीस के आसपास थी ने अपना अनुभव बताया "मैं पहाड़ी पर अकेली गई थी जब यह घटना घटी। अचानक मेरे सामने एक आदमी आकर खड़ा हो गया। उसका पाजामा नीचे था। पहले तो मैं घबरा गई और मेरे हाथ-पैर सुन्न हो गये। फिर मुझे अहसास हुआ कि वह ऐसा जान-बूझकर कर रहा था। मैं भाग खड़ी हुई। तब से मैं पहाड़ी पर अकेली नहीं जाती और न ही अपनी बेटियों को जाने देती हूं।"

इस इलाके में सुरक्षा जांच के दौरान यह स्पष्ट हो गया है कि उच्च व मध्यमवर्गीय दिल्ली तथा निम्नवर्गीय इलाकों खासकर पुनर्वास व दूर-दराज़ बसाये क्षेत्रों की ढांचागत व्यवस्थाओं में भारी फ़र्क़ है। यह पुरुषों-औरतों के प्रति आपराधिक मामलों की संख्या काफी बड़ी है। यहां पर कुछ ही मुख्य मार्गों पर बत्ती है तथा सार्वजनिक शौचालय व परिवहन सुविधाएं अपर्याप्त हैं। मुख्य रिहाइशी इलाकों के साथ-साथ शौचालय, खुले खाली मैदान, बस स्टॉप व सार्वजनिक परिवहन ऐसे स्थल हैं जो असुरक्षित हैं।

शुरूआत के वर्षों में यहां रहने वाले लोग पैसे देकर शौचालय इस्तेमाल करते थे जबकि कुछ लोग पास के खुले मैदानों में जाते थे, जैसा कि उनका हमेशा से नियम था। जैसे-जैसे समय गुज़रता गया शौचालयों की हालत खराब होती गई और गंदगी व पैसे की दिक्कत के कारण उनका उपयोग करना संभव नहीं रहा। शुरूआत के समय से ही यहां की औरतों ने खेतों व मैदानों में छेड़खानी व हिंसा के किस्से बयान किये थे। औरतों ने बताया कि अकेले शौच के लिए खेतों में जाने पर उन्हें पुरुषों के घूरने, छेड़ने व यौन अंग प्रदर्शन जैसी अश्लील हरकतें अक्सर झेलनी पड़ती हैं। उन्होंने बताया कि ऐसा होने पर वे अक्सर भाग जाती हैं या फिर एक झुंड बनाकर खेतों में जाती हैं।

औरतों ने यह भी बताया कि रात दस बजे शौचालय बंद हो जाते हैं और उस समय खेतों में जाना उनके लिए असुरक्षित रहता है। फसलें ऊंची-ऊंची होती हैं और उनके बीच में पुरुष छिपकर बैठ जाते हैं।

कुछ औरतों ने यह भी कहा कि सभी पुरुष ऐसी हरकतें जान-बूझकर नहीं करते। वे भी खेतों में फारिग होने जाते हैं और ऐसे में अगर वे गलती से औरतों के सामने पड़ जाएं

तो वे फौरन वहां से चले जाते हैं, पर कुछ पुरुष ज़बरदस्ती औरतों के शौचालयों में घुस जाते हैं या दरवाज़ा खोल देते हैं। शौचालय में काम करने वाले पुरुष भी औरतों के साथ छेड़छाड़ करते हैं।

इलाके की आबादी बढ़ने के साथ-साथ शौचालय की देख-रेख व सफाई की हालत बदतर हो गई है। सुरक्षा जांच के समय वहां स्थित दसों सार्वजनिक शौचालय काम नहीं कर रहे थे। उनके दरवाज़े टूटे थे तथा गंदगी व पानी की कमी के कारण उनका उपयोग असंभव था। ऐसे में औरतों झुंड बनाकर खेतों में जाने को विवश थीं। रात के समय वे अपनी लड़कियों को किसी भी हालत में अकेले बाहर नहीं जाने देतीं। इन मैदानों का दिन के समय उपयोग नहीं किया जाता जिससे औरतें शौच रोकने को मजबूर हो जाती हैं। कई परिवारों ने अपने मकानों के कुछ हिस्सों में अस्थाई शौचालय बना लिए हैं जिनसे थोड़ा बहुत गुज़ारा हो जाता है।

यहां आकर बसने वाले परिवारों की औरतों के लिए शुरूआत में हाट-बाज़ार करना मुश्किल भी होता था। यहां सामान बेचने वाले ठेले नहीं आते थे और कोई भी सौदा लेने के लिए बाहर सड़क तक जाना पड़ता था। इन सड़कों पर पुरुषों की छेड़छाड़, छींटाकशी, घूरने, टकराने, सहलाने जैसी हरकतें आम थीं। यहां दिन व रात दोनों समय नशे में धुत्त पुरुष घूमते रहते थे। क्योंकि ये कालोनी नई व अपरिचित थी इसलिए किसी एक अनचाही घटना के बाद औरतें बाहर एक दूसरे के साथ ही जाना पसंद करती थीं।

मदनपुर खादर स्थित सुलभ शौचालय जो बंद पड़ा है

एक औरत के अपने शब्दों में- "सभी कहते हैं कि हमें कार्यस्थल पर मौजूद पुरुषों से बचकर रहना चाहिए परन्तु मुझे काम पर सुरक्षित महसूस होता है। अधिक डर तो मुझे अपने घर से आने-जाने की यात्रा में लगता है। मैं सिर्फ़ पैसे कमाने के लिए बाहर आती-जाती हूं और यह खतरा उठाती हूं। बस चले तो मैं ऐसे कभी न करूं। मैं हरदम एक डर के साये में जीती हूं।"

चूंकि सड़क पर रात के समय रोशनी का अभाव था लिहाजा बाज़ार के सारे काम औरतें दिन में निपटाती थीं।

अपने दो वर्षों के दौरान हमने पाया कि युवा लड़कियां अपने उत्पीड़कों को उस बस्ती के नाम से चिन्हित करती हैं जहां से उनका पुनर्वास किया गया था। हमसे बातचीत के दौरान वह कुछ ऐसे बोलती थीं- 'राजनगर के लड़कों ने हमारे साथ छेड़खानी की थी' या 'नेहरू प्लेस का एक लड़का अलकनंदा की लड़की का पीछा कर रहा था।' उनके अनुसार उनकी अपनी बस्ती से आने वाले लड़के उनके साथ छेड़छाड़ नहीं करते परन्तु दूसरी बस्ती के लड़के उन्हें परेशान करते हैं। इन अजनबियों को पहचानने के लिए वे दूसरी बुजुर्ग महिलाओं, अपने भाइयों या बेटों की मदद लेती थीं क्योंकि ये लोग इन लड़कों को पहचान सकते थे। पुनर्वास के पहले वर्ष 'बाहरी' अजनबियों की छेड़छाड़ के डर से युवा लड़कियों की माताएं उन्हें कालोनी की बाहरी सड़कों पर अकेले नहीं जाने देती थीं।

जैसे-जैसे इलाके की आबादी बढ़ी, खाली प्लॉट भरने लगे व सड़कों पर रोशनी की व्यवस्था हुई, वैसे-वैसे यहां रहने वाले के बीच एक समुदाय का एहसास भी पनपने लगा। अब छेड़खानी के मामले पिछले इलाकों के नाम से नहीं बल्कि छेड़छाड़ की घटनाओं के रूप में पहचाने जाने लगे।

इस क्षेत्र की अंदरूनी सड़कें सुरक्षा के लिहाज़ से बेहतर हैं क्योंकि वहां दिन भर औरतें मौजूद होती हैं जो इस जगह को अपने रोज़मर्रा के कामों के लिए उपयोग करती हैं। इन जगहों का इस्तेमाल रात का भोजन निपटने तक चलता रहता है।

टूटा हुआ सार्वजनिक शौचालय

सभी पुनर्वास इलाकों में बगीचों, बारात घरों व दवाखानों की जगह निर्धारित की गई है। इन जगहों को कपड़े सुखाने, फालतू सामान फेंकने व बच्चों के खेलने के लिए उपयोग में लाया जाता है। परन्तु इन्हीं जगहों पर लड़के झुंड बनाकर खड़े भी रहते हैं जिससे शाम ढलने पर लड़कियां यहां आने से कतराती हैं। लड़कियां अक्सर अपने घरों के बाहर ही खेलती हैं। खेलकूद के लिए निर्धारित पार्क में पुरुष जुआ खेलते दिखाई देते हैं और वे इसमें बच्चों को आने नहीं देते। *जागोरी* ने हाल ही में इन पुरुषों से बातचीत करके इन जगहों को बच्चों के खेलने के लिए खाली कराने के प्रयास किये हैं।

जागोरी की युवा टीम ने जेंडर, लड़कियों की सुरक्षा व उत्पीड़न को लेकर भी यहां बातचीत की शुरूआत की है। हालांकि किसी बदलाव को आंकने के लिए अभी बहुत जल्दी है पर हमारे कार्यक्रमों से जुड़े युवा लड़कों ने अब लड़कियों के साथ छेड़खानी करना बंद कर दिया है तथा वे इस प्रक्रिया को अपने इलाकों के दूसरे हिस्सों तक ले जाने के इच्छुक हैं जिसे बदलाव के सकारात्मक संकेत के रूप में लिया जा सकता है।

अपनी सुरक्षा जांच के दौरान हमने यह भी पाया कि अधिकांश पुनर्वास क्षेत्रों की लड़कियां सार्वजनिक वाहनों में बस चालक व उनके साथियों की अश्लील छींटाकशी, उत्तेजक तेज़ संगीत व पुरुष सवारियों की यौनिक छेड़छाड़ का शिकार होती हैं। इसी परेशानी के कारण मदनपुर खादर जैसी कालोनियों में माता-पिता ने अपनी बेटियों की पढ़ाई-लिखाई बंद कर दी है जिससे वे बसों में होने वाली यौन हिंसा से बची रहें।

उम्रदराज़ महिलाएं भी इन इलाकों में असुरक्षित महसूस करती हैं हालांकि लड़कियों की तुलना में वे छेड़खानी करने वालों को अधिक चुनौती देकर सामना करती हैं। इनमें से काफी औरतें अनौपचारिक क्षेत्र में नौकरी करती हैं और आजीविका कमाने की जद्दोजेहद इन्हें बस, ऑटो या कम रोशनी वाले रास्तों पर चलने को मजबूर करती है।

जहां तक लड़कियों का सवाल है उन्हें दूसरी पुरुष सवारियों, वाहन चालकों व सार्वजनिक परिवहन के कंडक्टरों की हिंसा का सामना करना पड़ता है। सीधी छेड़खानी के अलावा वाहनों में सवार पुरुष लड़कियों पर गाड़ी की तेज़ रफ्तार का बहाना बनाकर गिर जाते हैं या फिर चिपकते-छूते रहते हैं। गाड़ियों में चालक/कंडक्टर के दोस्त सवार रहते हैं जो उन्हें घूरते हैं, अश्लील बातें करते हैं, गाने बजाते हैं और रास्ता रोककर उन्हें तंग करते हैं। यहां तक कि सड़क पर चलना भी लड़कियों के लिए दुश्वार होता है। लड़कियों ने काफी घटनाएं हमारे साथ बांटी जहां रात के समय अचानक पुरुष उनके सामने आ जाते हैं या फिर उनके काम, आने-जाने के समय को लेकर भद्दी बातें बोलते हैं। कभी-कभी तो ये लड़कियों का पीछा करते-करते उनके घरों तक पहुंच जाते हैं। इस इलाके में आने के कुछ महीनों बाद तक इन कामकाजी महिलाओं व लड़कियों ने पुनर्वास इलाकों से शहर तक आने तक के सफ़र को शहर में मौजूद होने से अधिक असुरक्षित बताया।

बस्तियों के टूटने व विस्थापन के बाद इन पुनर्वास बस्तियों में रहने वालों की ज़िंदगी का ब्योरा शहरी गरीब वर्ग विशेषतः औरत के बदतर हालात की एक झलक दिखाता है। जबरन पुनर्वास के कारण आर्थिक तकलीफ़ों के साथ-साथ सामाजिक संबंध के बिखराव को भी सहना पड़ता है। औरतें अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में सुरक्षित महसूस करने के लिए निरंतर नई-नई रणनीतियां बनाती रहती हैं। उनके के लिए सुरक्षा के मुद्दे शहरी जीवन के इस्तेमाल व भागीदारी के अधिकार के साथ नज़दीकी से जुड़े हैं। कुछ मुद्दे समय के साथ परिवर्तित होते जाते हैं पर भौतिक ढांचों की कमी उन पर अपनी सुरक्षा सुनिश्चित करने की ज़िम्मेदारी थोपती चली जाती है।